आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 13 अंक : 6 फरवरी, 2026 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास

77वें गणतंत्र दिवस पर कुलगुरू डॉ. सुमंत व्यास द्वारा दिये गये उद्‌बोधन के अंश

राजुवास परिवार के समस्त अधिकारीगण, संकाय सदस्य, कर्मचारी बन्धुओं, प्रिय छात्रगण आप सभी को 77वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई। 26 जनवरी 1950 को हमारे देश का संविधान लागू हुआ। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात 26 जनवरी 1950 को भारत एक संपूर्ण गणतंत्र के रूप में स्थापित हुआ। यह दिवस हमें संविधान की गरिमा, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा हमारे कर्तव्यों की निरंतर स्मृति कराता है। आज का यह पावन अवसर हमें यह संदेश देता है कि हमें अपने जीवन का प्रत्येक क्षण राष्ट्र के कल्याण, विकास एवं उत्थान हेतु समर्पित करना चाहिए। विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए भी हमें अपने कर्तव्य पथ से कभी विचलित नहीं होना चाहिए। विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाइयों द्वारा शैक्षणिक, अनुसंधान एवं प्रसार के क्षेत्र में किए जा रहे कार्य सराहनीय हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से विश्वविद्यालय ने अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, जो हम सभी के लिए गर्व का विषय हैं। यह उल्लेखनीय है कि बीकानेर के महाराजा गंगासिंह जी का भारत के संविधान निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात वे भारत की संविधान सभा के सदस्य बने और नवभारत के निर्माण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। हमें प्रत्येक कार्य का निर्वहन जन व समाज कल्याण, पशु कल्याण एवं विश्व कल्याण की भावना से करना चाहिए। कृषि एवं पशुचिकित्सा में नई तकनीकों एवं शोधों के माध्यम से समस्त कृषकों एवं पशुपालकों को समृद्ध बनाते हुए देश की उन्नति एवं विकास में सार्थक योगदान देना चाहिए। मानव कल्याण के साथ–साथ पशु–पक्षी कल्याण की भावना को भी अपने कार्यों का अभिन्न अंग बनाना चाहिए। पशुपालकों के हित में कार्य करना हमारा नैतिक एवं सामाजिक दायित्व है, और इस दिशा में सतत प्रयास आवश्यक हैं। मैं विद्यार्थियों से आह्वान करता हूँ कि वे शैक्षणिक उत्कृष्टता, अनुसंधान एवं नवाचार के क्षेत्र में निरंतर प्रयासरत रहें। शैक्षणिक उत्कृष्टता हेतु सम्मानित होने वाले विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई तथा उत्कृष्ट कार्य करने वाले शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक कर्मचारियों को भी साधुवाद। यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने इस सत्र में आई.सी.ए.आर. एवं प्री–पी.जी. परीक्षाओं में अखिल भारतीय स्तर पर स्नातकोत्तर अध्ययन हेतु सफलता प्राप्त कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। मैं सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ तथा आप सभी को 77वें गणतंत्र दिवस की पुनः हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ। जय हिन्द, जय भारत।

माननीय विधायक, खाजुवाला डॉ. विश्वनाथ मेघवाल एवं कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास द्वारा प्रशिक्षण संदर्शिका का विमोचन

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

77वें गणतंत्र दिवस का भव्य आयोजन
कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने फहराया तिरंगा

गणतंत्र दिवस के 77वें समारोह के अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने विश्वविद्यालय प्रांगण में तिरंगा फहराकर सलामी दी। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने सभी को 77वें गणतंत्र दिवस की बधाई देते हुए कहा कि आज का दिन हमें यह याद दिलाता है कि हमें अपने जीवन का हर क्षण देश कल्याण एवं उत्थान में गुजारना चाहिए। हमें सभी चुनौतियों का सामना करते हुए अपने कर्तव्य पथ को नही छोड़ना चाहिए। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाईयों द्वारा शैक्षणिक, अनुसंधान एवं प्रसार कार्यो एवं उपलब्धियों की सराहना की। कुलगुरु डॉ. सुमन्त व्यास ने कहा कि बीकानेर के महाराजा गंगासिंह जी का भी संविधान के निर्माण में भागीदारी रही है। स्वतंत्रता के बाद में भारतीय संविधान सभा के सदस्य बने और नए भारत के निर्माण में अपना योगदान दिया। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कहा कि हमें मानव कल्याण के साथ–साथ पशु पक्षी कल्याण का भाव भी रखना चाहिए। हमारा नैतिक दायित्व है कि हमें पशुपालकों के हितार्थ कार्य करना चाहिए। कुलगुरु ने विद्यार्थियों को शैक्षणिक उत्कृष्टता एवं शोध हेतु भी प्रेरित किया। डॉ. सुमंत व्यास ने शैक्षणिक उत्कृष्टता हेतु सम्मानित होने वाले विद्यार्थियों को बधाई दी तथा उत्कृष्ट कार्य करने वाले शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक स्टाफ को बधाई दी। गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर समारोह में विद्यार्थियों एवं कार्मिको ने देश भक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी एवं उत्कृष्ट कार्यो हेतु एवं उपलब्धता हेतु शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को सम्मानित किया। कुलगुरु डॉ. सुमन्त व्यास ने सभी को मतदाता दिवस की शपथ दिलाई एवं वोट अधिकार का उपयोग करने हेतु प्रेरित किया।

प्रसार, शोध एवं नवाचारों से किसानों एवं पशुपालकों का विकासशील परिवर्तन हुआ है : माननीय विधायक डॉ. विश्वनाथ मेघवाल

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर एवं उपनिदेशक कृषि एवं पदेन परियोजना निदेशक (आत्मा) हनुमानगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में आत्मा योजनान्तर्गत अन्तर्राज्य पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम 3–7 जनवरी को आयोजित किया गया। प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन सत्र के मुख्य अतिथि माननीय विधायक, खाजुवाला व विश्वविद्यालय प्रबंध मण्डल के सम्मानित सदस्य डॉ. विश्वनाथ मेघवाल एवं अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने की। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा माननीय विधायक डॉ. विश्वनाथ मेघवाल ने कहा कि पश्चिमी राजस्थान में कृषि एवं पशुपालन, पशुपालकों की आजिविका का मुख्य व्यवसाय है। राजस्थान के मरूस्थली क्षैत्रो में मौसम की विपरित परिस्थितियों में पशुपालन किसानों के लिए और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। कृषि एवं वेटरनरी विश्वविद्यालय के दशकों से प्रसार, नवाचार एवं शोध परिणामों से इस क्षैत्र में कृषि एवं पशुपालन को सुदृढता मिली है जिसके परिणाम स्वरूप कृषकों को स्वरोजगार एवं आर्थिक स्वावलम्बन मिला है विकासशील परिवर्तन देखने को मिला है। डॉ. विश्वनाथ मेघवाल ने विद्यार्थियों को नये शोध एवं नवाचारों से राज्य में पशुपालक हितार्थ कार्ये करने हेतु भी प्रेरित किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने अपने अध्यक्ष्य उद्बोधन में बताया कि वेटरनरी विश्वविद्यालय शिक्षा, प्रसार एवं अनुसंधान के क्षैत्र में विकास हेतु अथक प्रयासरत है। वेटरनरी विश्वविद्यालय लम्बे समय से किसानों एवं पशुपालकों हेतु पशुपालन की क्षैत्र की विभिन्न समस्याओं का समाधान कर उनके विकास के लिए कार्य कर रहा है।। कुलगुरु डॉ. सुमन्त व्यास ने कहा कि डॉ. विश्वनाथ मेघवाल का कृषि एवं वेटरनरी विश्वविद्यालय से लम्बे समय से सम्बन्ध रहा है उनके सहयोग एवं दुरदर्शिता से विश्वविद्यालय पशुपालकों, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के कल्याण हेतु विभिन्न नीति निर्धारण कर विकास हेतु कार्य करेगा। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने स्वागत सम्बोधन दिया और विश्वविद्यालय की राज्य के विभिन्न जिलों में गांव–ढाणी तक प्रयारित प्रसार कार्यक्रमों की जानकारी प्रदान की। डॉ. धूड़िया ने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में नोहर, भादरा एवं हनुमानगढ़ से कुल 30 अनुसूचित जाति वर्ग के पशुपालको ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यक्रम के दौरान "उन्नत पशुपालन तकनीक" विषय पर प्रशिक्षण संदर्शिका एवं "पशुपालन नये अयाम" हिन्दी मासिक पत्रिका के नवीन अंक का विमोचन भी किया गया। धन्यवाद ज्ञापन निदेशक अनुसंधान डॉ. बी.एन. श्रृंगी ने किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन डॉ. संजय सिंह ने किया। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन डॉ. देवीसिंह ने किया। कार्यक्रम के दौरान निदेशक पी.एम.ई. प्रो. उर्मिला पानू, निदेशक क्लिनिक्स प्रवीण बिश्नोई, निदेशक एच.आर.डी. राहुल सिंह पाल सहित फैकल्टी सदस्य, पशुपालक व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

करणीसर भाटियान में पशु जैव विविधता संरक्षण जागरूकता शिविर

राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के पशु जैव विविधता संरक्षण केंद्र द्वारा खाजूवाला के करणीसर भाटियान में 8 जनवरी को देशी नस्लों के संरक्षण को बढ़ावा देने हेतु जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। खाजूवाला के पशुपालकों को देशी गायों के संरक्षण हेतु जागरूक किया गया। केंद्र की प्रभारी अधिकारी डॉ. रजनी अरोड़ा ने बताया कि केन्द्र के डॉ. नरसी राम गुर्जर ने पशुपालकों को पशुपालन की वैज्ञानिक विधियों की जानकारी दी। देशी गौवंश न केवल सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि आर्थिक रूप से भी अधिक लाभप्रद है। पशुओं के बेहतर स्वास्थ्य और दुग्ध उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए पशु पोषण के महत्व की जानकारी प्रदान की गई। इस अवसर पर पशुओं को बीमारियों से बचाने और खनिज तत्वों की कमी दूर करने के लिए मिनरल मिक्सचर के पैकेट पशुपालकों को निःशुल्क वितरित किए गए। इस जागरूकता शिविर में क्षेत्र के कुल 34 महिला एवं पुरुष पशुपालकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में गांव के भवानी शंकर, चैन सिंह, मनीराम कालू राम, करणी सिंह, उदय पंवार, लक्ष्मी देवी, पोकर राम आदि का भी सहयोग रहा।

अंतर्राष्ट्रीय ऊंट उत्सव के अवसर पर राजुवास प्रदर्शनी

बीकानेर में चल रहे तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय उष्ट्र उत्सव के अवसर पर 10 जनवरी को राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान संस्थान में वेटरनरी विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी स्टॉल का आयोजन किया गया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित इस प्रदर्शनी को वेटरनरी विश्वविद्यालय की विभिन्न तकनीकों, देशी गाय की नस्लों एवं पशुपालकों हेतु उपयोगी पुस्तिकाओं का प्रदर्शन किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास, एन.आर.सी. सी., बीकानेर के निदेशक डॉ. अनिल कुमार पूनिया एवं विश्वविद्यालय प्रथम महिला सुनीता व्यास ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। प्रदर्शनी का ऊंट उत्सव में सम्मिलित होने वाले विभिन्न वैज्ञानिक, पशुपालक, विदेशी सैलानियों, विद्यार्थियों एवं आमजन ने भी प्रदर्शनी का अवलोकन किया। ऊंट उत्सव के दौरान राजुवास स्टॉल को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्रदर्शनी के दौरान स्टॉल का आयोजन डॉ. देवीसिंह एवं डॉ. संजय सिंह की देखरेख में किया गया।

गौशाला प्रबंधकों एवं डेयरी संचालकों का प्रशिक्षण

निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास बीकानेर एवं निदेशालय गोपालन, राजस्थान, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में पंजीकृत गौशालाओं के प्रबंधकों एवं डेयरी संचालकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 19–21 जनवरी तक आयोजित किया गया। प्रशिक्षण उद्घाटन सत्र पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने गौशाला प्रबंधकों एवं डेयरी संचालकों से संवाद के दौरान गौशाला प्रबंधन के महत्व को बताया। कुलगुरु डॉ. सुमन्त व्यास ने कहा कि गौशाला का प्रबंधन वैज्ञानिक तरीके से होने से गौशालाओं को आर्थिक स्वावलम्बन प्राप्त होगा। गौशालाओं में विभिन्न पत्रावलियों का संधारण बहुत आवश्यक है। उन्होने कहा कि गौशाला संचालकों को गौ–संवर्धन पर भी केन्द्रित होना चाहिए। गौ–उत्पादों के मूल्य संवर्धन, गोबर–गौमूत्र को प्रसंस्कृत करके उपयोग करने से भी गौशाला स्वावलम्बी हो सकती है। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने गौशालाओं में कृत्रिम गर्भाधान तथा गोबर गैस के उपयोगिता पर भी संवाद किया। अतिरिक्त निदेशक, पशुपालन विभाग, बीकानेर डॉ. संजय शर्मा प्रशिक्षण समापन सत्र के मुख्य अतिथि रहे। डॉ. संजय शर्मा ने गौशाला प्रबंधकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि निराश्रित गौवंश का संरक्षण बहुत ही पुण्य कार्य है। राजस्थान सरकार भी गौशालाओं को इस हेतु अनुदान भी रही है। डॉ. शर्मा ने गौशालाओं के आर्थिक सुदृढ़ीकरण के महत्व पर प्रकाश डाला और प्रशिक्षण के माध्यम से अर्जित ज्ञान को गौशाला में उन्नत प्रबंधन हेतु अपनाने के लिए प्रेरित किया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि राज्य सरकार की गौसंरक्षण एवं गौसंर्वधन हमेशा से प्रथामिकता रही है तथा वर्तमान में इसकी महत्ती आवश्यकता है। इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ व सीकर जिलों के 35 गौशाला संचालक एवं प्रबंधकों ने भाग लिया जिनको विषय विशेषज्ञो द्वारा उन्नत गौशाला प्रबंधन, देशी गौवंश एवं संरक्षण, देशी गौवंश स्वच्छता एवं आवास प्रबंधन, संतुलित आहार, वर्षभर हराचारा, वर्मी कम्पोस्ट, गोबर का मूल्य संवर्धन राज्य सरकार की डेयरी फार्म योजनाएं, गौनस्ल सुधार, पंचगव्य का महत्व आदि विषयों पर व्याख्यान के साथ–साथ आदर्श गौशाला एवं डेयरी भ्रमण करवाया गया। डॉ. संजय सिंह प्रशिक्षण समन्वयक रहें।

वन्यजीव रेस्क्यू तकनीकों पर कार्यशालाओं

राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के सेंटर फॉर स्टडीज़ ऑन वाइल्डलाइफ मैनेजमेंट एंड हेल्थ द्वारा वन्यजीव रेस्क्यू तकनीकों पर तीन कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। कार्यशालाओं के समन्वयक डॉ. जे.पी. कछावा ने बताया कि वन्यजीव रेस्क्यू तकनीको पर एक दिवस की तीन कार्यशालाओं का आयोजन 12 दिसंबर, 8 जनवरी एवं 13 जनवरी 2026 को किया गया। इन कार्यशालाओं का उद्देश्य वन्यजीवों के रेस्क्यू, सुरक्षित हैंडलिंग एवं पुनर्वास (रीहैबिलिटेशन) से संबंधित व्यवहारिक ज्ञान एवं कौशल को सुदृढ़ करना था। प्रशिक्षण सत्रों में वन्यजीव रेस्क्यू की मानक प्रक्रियाएं, रेस्क्यू पश्चात देखभाल, पुनर्वास तकनीकें तथा नैतिक एवं सुरक्षित हैंडलिंग के सिद्धांतों पर विस्तृत चर्चा की गई। प्रतिभागियों को वन्यजीव प्रबंधन में प्रयुक्त रासायनिक नियंत्रण तकनीकों एवं डार्ट गन की प्रायोगिक जानकारी दी गई। तीनों कार्यशालाओं में कुल 60 पशुचिकित्सा के विद्यार्थियों ने भाग लिया। समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निदेशक अनुसंधान डॉ. बी.एन. श्रृंगी रहे। कार्यक्रम में संदीप चालानी, उप वन संरक्षक ने वन्यजीव रेस्क्यू के दौरान वन विभाग एवं पशु चिकित्सकों के बीच समन्वय के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रशिक्षण सत्रों के दौरान डॉ. स्पर्श दुबे द्वारा वन्यजीवों के पुनर्वास (रीहैबिलिटेशन) की प्रक्रियाओं, पोस्ट–रेस्क्यू केयर एवं पुनर्वास के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों पर जानकारी दी गई। डॉ. एल. एन. सांखला व डॉ. प्रियंका राठौड़ का प्रशिक्षण के आयोजन में सहयोग रहा।

पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण विषय पर जागरुकता

विश्वविद्यालय के पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र की मुख्य अन्वेषक डॉ. दीपिका धुड़िया ने बताया कि 20 जनवरी को श्री अभय पशुपालन महाविद्यालय, गांधी नगर, बीकानेर में छात्र–छात्राओं हेतु एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केंद्र के सह–अन्वेषक डॉ. देवेंद्र चौधरी ने अस्पतालों से निकलने वाले जैविकीय अपशिष्ट का मानव स्वास्थ्य व वातावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी देने के साथ ही जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट से होने वाले संक्रामक रोगों से बचाव एवं जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट का कैसे उचित निस्तारण किया जाये, के बारे में विस्तार से विद्यार्थियों को बताया। जागरूकता कार्यक्रम के दौरान आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। कार्यक्रम के दौरान श्री अभय पशुपालन महाविद्यालय, बीकानेर के प्राचार्य डॉ. वीरेंद्र नेत्रा व अन्य अध्यापक उपस्थित रहे।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 16 एवं 30–31 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक एवं दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 57 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 16 जनवरी को गांव भोजेवाला तथा 27–28 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 106 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा दिनांक 30 जनवरी को गांव सिकवाड़ा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 23 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 27 जनवरी को गांव मांडवा तथा 13 जनवरी को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 109 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ द्वारा 12, 16, 19, 23, 27 एवं 29 जनवरी को गांव ढाणी दूदगिर, चांदगोठी, मालसर, तांबा खेड़ी, खेजड़ा दिखनादा एवं बंगी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 142 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा द्वारा 1 एवं 21 जनवरी को गांव साबलपुरा एवं बाडासोडा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 107 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 3, 7 एवं 30 जनवरी को गांव मुनसरी, एडी नोहर एवं भगवानसर बास में तथा 8–9 जनवरी को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 214 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

जूनोटिक क्षय रोग (टीबी) : एक सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती

भारत विश्व का सबसे बड़ा पशुधन सम्पन्न देश है जहां विशेषकर राजस्थान जैसे राज्यों में पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था की आधारशिला माना जाता है। किन्तु मानव और पशुओं के इस निकट सहअस्तित्व के कारण कुछ संक्रामक रोगों के प्रसार होने की संभावना भी बढ़ जाती है। ट्यूबरकुलोसिस (क्षय रोग) केवल मानव तक सीमित बीमारी नहीं है। यह रोग पशुओं मुख्यतः गाय और भैंसों से भी मनुष्यों में संचरित होता है इसलिए इसे जूनोटिक ट्यूबरकुलोसिस कहा जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकलन के अनुसार वर्ष 2016 में विश्वभर में लगभग 1,47,000 लोग जूनोटिक टीबी से प्रभावित हुए जिनमें अधिकांश मामले दक्षिण–पूर्वी एशिया और अफ्रीकी क्षेत्रों से रिपोर्ट किए गए।

जूनोटिक टीबी (क्षय रोग) क्या है!

सामान्यतः मनुष्यों में टीबी का कारण मायकोबेक्टीरियम टयूबरकुलोसिस जीवाणु होता है जबकि जूनोटिक टीबी का मुख्य कारक मायकोबेक्टीरियम बोविस है। यह जीवाणु मुख्य रूप से गाय, भैंस तथा अन्य मवेशियों में पाया जाता है और पशु जनित संक्रमण के माध्यम से मनुष्यों तक पहुंच सकता है।

संक्रमण के प्रसार के मार्ग: पशुओं से मनुष्यों में टीबी का संचरण मुख्यतः निम्नलिखित माध्यमों से होता है:

- **दूषित दुग्ध एवं दुग्ध उत्पादः** संक्रमित पशु का कच्चा (बिना उबला) दूध पीना या उससे बने उत्पादों का सेवन।
- **श्वसन मार्ग (एरोसोल संक्रमण):** पशुपालकों, पशुचिकित्सकों तथा कसाईखानों में कार्यरत व्यक्तियों का बीमार पशुओं की खांसी या छींक से उत्पन्न कणों के संपर्क में आना।

लक्षण एवं पहचानः

पशुओं में लक्षण : अधिकांश मामलों में पशुओं में टीबी के प्रारम्भिक लक्षण स्पष्ट नहीं होते, किन्तु उन्नत अवस्था में निम्न संकेत दिखाई दे सकते हैं:

- पशुओं के वजन में निरंतर कमी एवं कमजोरी आ जाती है।
- हल्की सूखी खांसी धीरे–धीरे बढ़ती है।
- गर्दन क्षेत्र की लिम्फ ग्रंथियों में सूजन आ जाती है।
- दूध उत्पादन में गिरावट आ जाती है।

मनुष्यों में लक्षणः

- कई सप्ताह तक बनी रहने वाली खांसी हो जाती है।
- बुखार तथा रात्री में अत्यधिक पसीना आना।
- वजन कम होना एवं शारीरिक दुर्बलता दिखाई देना।
- थकान एवं सांस लेने में कठिनाई होना।
- कुछ मामलों में रोग फेफड़ों के अतिरिक्त अंगो जैसे लिम्फ नोड्स, किडनी या प्लीहा को भी प्रभावित कर सकता है जिससे निदान और जटिल हो जाता है।

पशुओं में उपचारः

पशुओं में टीबी का नियमित उपचार सामान्यतः सम्भव नही है। इसके पीछे कई वैज्ञानिक और आर्थिक कारण है जैसे उपचार की लंबी अवधि, अत्यधिक लागत, दवा प्रतिरोध की संभावना तथा उपचार के दौरान दूध एवं मांस के माध्यम से संक्रमण फैलने का जोखिम इसलिए प्रबंधन एवं रोकथाम ही प्रमुख उपाय माने जाते है।

मनुष्यों में उपचारः

- विशेषीकृत उपचार व्यवस्थाः चूंकि टीबी का उपचार मुख्य रूप से 6–9 माह तक चलता है जिसमें आइसोनिपामिड, रिफाम्पसिन तथा पायराजीनेमाइड दिया जाता है।
- डायरेक्टली ऑब्जर्व्ड ट्रीटमेंट रणनीतिः सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों के माध्यम से डायरेक्टली ऑब्जर्व्ड ट्रीटमेंट के अंतर्गत उपचार पूर्णतः निःशुल्क उपलब्ध कराया जाता है।

बचाव एवं रोकथाम के उपायः

- जूनोटिक टीबी की रोकथाम हेतु वन हेल्थ दृष्किोण को अपनाना अत्यंत आवश्यक है।
- कच्चे दूध का सेवन न करें, दूध को अच्छी तरह से उबालकर ही उपयोग में लेवें।
- पशुओं की नियमित रूप से टयूबरकुलिन टेस्ट द्वारा जांच करावें।
- दो सप्ताह से अधिक खांसी, वजन में कमी या सायः के समय बुखार होने पर तुंरत जांच करावें।
- बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें तथा बाड़ों में स्वच्छता, धूप और वायु संचार सुनिश्चित करें।
- पशुओं में लंबे समय तक खांसी दिखने पर निकटतम सरकारी पशुचिकित्सालय से संपर्क करें।
- पोष्टिक तथा सन्तुलित आहार महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

क्षय रोग केवल एक चिकित्सकीय समस्या नहीं है बल्कि सामाजिक, आर्थिक एवं जीवन शैली से जुड़ी गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती है। यह रोग आज भी व्यापक है किन्तु पूर्णतः रोकने योग्य और उपचार योग्य है। भारत एवं विशेषकर राजस्थान जैसे राज्यों में जहां मानव और पशुधन का गहरा संबध है। टीबी नियंत्रण केवल औषधीय उपचार तक सीमित नहीं रह सकता। सुरक्षित दूध एवं खाद्य पदार्थो का उपयोग, स्वच्छ पर्यावरण, स्वस्थ पशुधन और जन जागरूकता। ये सभी मिलकर टीबी के संचरण की श्रृंखला को तोड़ सकते हैं। इस रोग के प्रति शून्य सहिष्णुता की नीति अपनाना समय की अनिवार्य आवश्यकता है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
वरिष्ठ सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

दूध उत्पादन को प्रभावित करने वाले कारक

सामान्य परिस्थितियों में स्तनपान के पहले छः सप्ताह के दौरान दूध का उत्पादन बढ़ता है और फिर धीरे–धीरे कम हो जाता है। स्तनपान अवधि के दौरान उत्पादित दूध की वास्तविक मात्रा कई कारकों से प्रभावित होती है जैसेः नस्ल, समानता, ब्याने का मौसम, भौगोलिक क्षेत्र, प्रबंधन कारक (पोषण दूध देने की आवृति)।

नस्लः उत्तरी अमेरिका में होल्स्टीन गाय में दूध उत्पादन की मात्रा सबसे अधिक है और सभी प्रमुख दूध घटको (यानि वसा, प्रोटीन और लैक्टोज) का कुल उत्पादन सबसे अधिक है। हालांकि एक निश्चित डेयरी नस्ल के भीतर व्यक्तियों के बीच दूध की उपज और संरचना में बहुत भिन्नताएं है।

शुष्क अवधिः डेयरी गायों को आम तौर पर अगले ब्याने से पहले दो महिने तक सुखाया जाता है। यह आराम अवधि अगले ब्याने में दूध उत्पादन को अधिकतम करने के लिए आवश्यक है। जब शुष्क अवधि 40–60 दिनों से कम होती है (25–40 प्रतिशत कम दूध) तो दूध की पैदावार आम तौर पर कम हो जाती है। 60 दिनो से अधिक की शुष्क अवधि से दूध उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्वि नहीं होती है। लम्बी शुष्क अवधि ब्याने के अंतराल को सामान्य 13–14 महीने के अंतराल से आगे बढ़ाकर गाय के औसत वार्षिक उत्पादन को कम करती है और डेयरी गाय के जीवनकाल उत्पादन में कमी का कारण बनती है। शुष्क अवधि के प्रभाव का एक हिस्सा ब्याने के समय गाय की शारीरिक स्थिति से सम्बन्धित है। ब्याने के समय अच्छी शारीरिक स्थिति वाली गायें ब्याने के समय दुबले शरीर वाली गायों की तुलना में अगले ब्याने के दौरान अधिक दूध उत्पादन करती है।

ब्याने के समय आयु और शरीर का वजनः बछड़े के जन्म (आयु) के साथ गाय द्वारा उत्पादित दूध की मात्रा बढ़ती है। यह आंशिक रूप से शरीर के वजन में वृद्वि के कारण होती है, जिसके परिणामस्वरूप पाचन तंत्र बडा होता है और दूध के स्त्राव के लिए स्तन ग्रंथि बड़ी होती है। उम्र के साथ दूध उत्पादन में वृद्वि का एक अन्य कारण बार–बार गर्भधारण और स्तनपान के प्रभाव के कारण होता है। गायों के दूध उत्पादन पर डेटा से पता चलता है कि दूध उत्पादन में 20 प्रतिशत वृद्वि शरीर के वजन में वृद्वि के कारण होती है और 80 प्रतिशत बार–बार गर्भधारण और स्तनपान के प्रभाव के कारण होती है। बार–बार गर्भधारण और स्तनपान के परिणामस्वरूप पहले से पांचवें स्तनपान तक दूध उतपादन में 30 प्रतिशत की वृद्वि हो सकती है।

स्तनपान संख्याः दूध उत्पादन स्तनपान संख्या के साथ बढ़ता है और चौथे या पांचवें स्तनपान में अधिकतम होता है। यह थन के बढ़ते विकास, आकार और पहले स्तनपान वाले पशु की तुलना में शरीर के बढ़ते आकार का परिणाम है। दो साल की उम्र में बछड़े को जन्म देने वाली एक प्रथम प्रसव गाय की अपेक्षित परिपक्व उपज का अनुमान पहले स्तनपान की उपज को 1.3 से गुणा करके लगाया जा सकता है।

गर्भावस्थाः गर्भावस्था का दूध उत्पादन पर निरोधात्मक प्रभाव पड़ता हैं दूध उत्पादन में अधिकांश कमी गर्भावस्था के पांचवें महीने के बाद होती है। गर्भावस्था के 8वें महीनें तक गैर गर्भवती गाय की तुलना में

उस महीने के लिए दूध उत्पादन 20 प्रतिशत कम हो सकता है। गर्भावस्था का निरोधात्मक प्रभाव भ्रूण की आवश्यकता के कारण होने की संभावना नही हैं, जो गर्भावस्था के अंतिम दो महीनों तक काफी नहींबढ़ती है ऐसा माना जाता है कि गर्भावस्था के बढ़ने के साथ एस्ट्रोजन और प्रोजेस्टेरोन के स्तर में वृद्वि दूध के स्त्राव को रोकती है।

बछड़े के जन्म का मौसमः बछड़े के जन्म के मौसम का दूध उत्पादन पर प्रभाव नस्ल, दूध देने की अवस्था और जलवायु की स्थिति से प्रभावित होता है। पतझड़ से वंसत तक बछड़े देने वाली गायें गर्मियों में बछड़े देने वाली गायों की तुलना में अधिक दूध (8 प्रतिशत तक अधिक) देती है। यह संभवतः दिन के प्रकाश और परिवेश के तापमान के बीच परस्पर क्रिया के कारण होता है। डेयरी गाय के बेहतर आहार और प्रबंधन के कारण मौसमी अंतर कम महत्वपूर्ण हो गए हैं।

परिवेश का तापमानः दूध उत्पादन पर परिवेश के तापमान का प्रभाव नस्ल पर निर्भर करता है। होल्स्टीन और अन्य बड़ी नस्लें कम तापमान के प्रति अधिक सहिष्णु होती है, जबकि छोटी नस्लें विशेष रूप से जर्सी उच्च तापमान के प्रति अधिक सहिष्णु होती है। होल्स्टीन गाय के लिए इष्टतम तापमान $10^{o}C$ है। जब परिवेश का तापमान $27^{o}C$ से अधिक हो जाता है तो दूध उत्पादन में गिरावट आती है। दूध उत्पादन में कमी मुख्य रूप से चारा सेवन में कमी के कारण। उच्च तापमान कम उत्पादन वाली गायों की तुलना में उच्च उत्पादन वाली गायों को अधिक प्रभावित करता ह्रै और यह स्तनपान के चरम के दौरान विशेष रूप से हानिकारक है।

रोगः डेयरी गायों की दूध की पैदावार को प्रभावित करने वाली मुख्य बीमारी है स्तनदाह। यह स्त्रावी ऊतकों की दूध घटकों को संश्लेषित करने की क्षमता को बाधित करता है और स्त्रावी ऊतकों में विनाश के कारण स्तनदाह के नैदानिक लक्षणों के गायब होने के बाद भी उत्पादन में कमी बनी रहती है।

डॉ. दीपक सुंबरिआ, डॉ. अभिषेक गुप्ता एवं डॉ. विक्रांत सुदन
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

बर्ड फ्लू

प्रवासी पक्षियों से बढ़ता खतरा एवं ''वन हेल्थ दृष्टिकोण''

राजस्थान की मरुभूमि शीतकाल में न केवल अपने सौंदर्य के लिए बल्कि हजारों मील दूर साइबेरिया और मध्य एशिया से आने वाले मेहमान पक्षियों, विशेषकर कुरजा (हेमोइजेल क्रेन) के लिए भी जानी जाती है। फलोदी का खीचन गांव हो या ताल–छापर के आस–पास का क्षेत्र इन पक्षियों का आगमन पर्यावरण के लिए उत्सव जैसा प्रतीत होता है। लेकिन पिछले कुछ समय से प्रवासी पक्षियों के साथ आने वाला एवियन इन्फ्लूएंजा (HSN1) वायरस, जिसे हम 'बर्ड फ्लू' के नाम से भी जानते है, राजस्थान में इन पशुपालन और सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिये एक गंभीर चुनौती बनता जा रहा है।

प्रवासी पक्षी एवं वायरस का प्रसार :

एवियन इन्फ्लूएंजा का वायरस H5N1 एक अत्यधिक संक्रामक और घातक वायरस है, जो कि इन्फ्लूएंजा टाइप 'A' वायरस से होता हो तथा इसे पक्षियों के लिए अत्यंत घातक (HPAI) श्रेणी में रखा गया है। प्रवासी पक्षी, विशेष रूप से जलीय पक्षी, बर्ड फ्लू वायरस के प्राकृतिक भंडार होते है। ये पक्षी 'सेंट्रल एशियन फ्लाईवे' के माध्यम से भारत में पहुंचते है।

प्रसार का तरीका : वायरस इन पक्षियों की लार, नाक के स्राव और बीट इत्यादि में मौजूद होता है। जब ये पक्षी स्थानीय तालाबों या खेतों में भोजन की तलाश मे जाते हैं, तो वायरस स्थानीय जलीय निकायों और मिट्टी में फैल जाता है।

बर्ड फ्लू के लक्षण :

1. **श्वसन संबंधी समस्याएं :** छींकना खांसी और सांस लेने में कठिनाई।
2. **सूजन :** सिर, आंखो और कलंगी के आसपास नीली सूजन का आना।
3. **उत्पादन में कमी :** अंडों के उत्पादन में आकस्मिक भारी गिरावट।
4. **आकस्मिक मृत्यु :** पक्षियों की बिना किसी पूर्व लक्षण के अचानक मृत्यु हो जाना।

मनुष्यो में बड़े फ्लू के लक्षण :

1. अचानक तेज बुखार (100.4^{0}C में अधिक)।
2. श्वसन सम्बन्धी समस्याएं जैसे खाँसी, साँस लेने में कठिनाई।
3. पिंक आई (कंजक्टिवाइटिस) : आँखो में लालिमा, सूजन या पानी आना।
4. मांसपेशियों में दर्द और अत्यधिक थकान।
5. गंभीर मामलो में पेट दर्द, उल्टी के दस्त भी हो सकते है।

वन हेल्थ और मानवीय जोखिम :–बर्ड फ्लू केवल पक्षियों की बीमारी नहीं है, यह एक जूनोटिक रोग हैं, हैं, जो कि पक्षियों से मनुष्यों में फैल सकता हैं। संक्रमित पक्षियों के सीधे संपर्क में आने बाले पॉल्ट्री वर्कर, शिकारी और फील्ड में काम करने वाले पशु चिकित्सको के लिए जोखिम हमेशा बना रहता हैं। H5N1 वायरस के म्यूटेशन (उत्परिवर्तन) की क्षमता से यह महामारी का कारक बन सकता हैं।

बचाव तथा उपचार : –इस बीमारी का सबसे अच्छा इलाज इसे फैलने से रोकना है।

1. प्रभावित क्षेत्रों और फार्मी को 1% से 5% सोडियम हाइपोक्लोराइट से साफ करे एवं संक्रमित क्षेत्र की घेराबंदी करे।
3. मृत पक्षियों को गहरे गड्ढे में चूने और ब्लीचिंग पाउडर के साथ सुरक्षित निस्तारित करें।
4. पक्षियों की असामान्य मृत्यु दिखने पर तुरंत पशुपालन विभाग को सूचित करें।

निष्कर्ष :

पक्षी हमारे पारिस्थितिकी तंत्र का एक अभिन्न अंग हैं लेकिन उनके साथ आने वाले जैविक खतरों को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। सतर्कता ही इस विदेशी खतरे से हमारे पशुधन और मानन स्वास्थ्य को बचाने का एकमात्र प्रभावी हथियार है।

डॉ. जयन्त स्वामी
पीएच.डी. स्कॉलर, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

आजीविका को बेहतर बनाने के लिए वागाराम ने पशुपालन की ओर किया रूख

जालौर जिले के जसवन्तपुरा तहसील के गांव सिकवाड़ा निवासी 60 वर्षीय पशुपालक वागाराम पिछले कई वर्षो से खेती एवं पशुपालन से जुड़े हुए है। पशुपालन के क्षेत्र में उन्होनें अपनी मेहनत से पूरे परिवार का पालन–पोषण कर रहें है। वागाराम पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर से काफी समय से सम्पर्क में है तथा पशु विज्ञान केन्द्र द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण शिविरों में नवीनतम तकनीकों के बारे में समय–समय पर जानकारी प्राप्त करते रहते हैं ताकि वे अपने पशुपालन व्यवसाय को ओर अधिक बेहतर कर अपनी आर्थिक उन्नति को बढ़ा सके। वागाराम के पास खेती के लिए जमीन कम थी और परिवार के पालन–पोषण की सारी जिम्मेदारी उनके उपर होने तथा घर के खर्चे बढ़ने एवं बच्चो की शिक्षा के लिए उनके पास पर्याप्त संसाधन नहीं थे ऐसे में उन्होनें अपनी आजीविका बढ़ाने के लिए खेती के साथ–साथ पशुपालन की ओर रूख बनाया। उन्होनें पशुपालन की शुरूआत एक गाय एवं एक भैंस से की तथा पशु विज्ञान केन्द्र से लगातार जुड़े रहकर उन्होनें पशुओं के उचित आवास, पशु आहार, स्वास्थ्य प्रबंधन एवं प्रजनन सम्बन्धि तकनीकों के बारे में जानकारी प्राप्त कर पशुपालन व्यवसाय को आगे बढ़ाया। वर्तमान में वागाराम के पास मुर्रा नस्ल की 15 भैंसे एवं गिर नस्ल की 6 गायें है जिनसे प्रतिदिन लगभग 120–130 किलो दूध का उत्पादन हो रहा है। वागाराम के पास एक पाड़ा भी है जिससे वे अपनी खेती के कार्य करते हैं। पशु विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के मार्ग–दर्शन से उन्होनें अपने खेत में मीठे पानी का एक ट्यूबवेल भी शुरू किया है जिससे वे अपने पशुओं के लिए पर्याप्त मात्रा में हरे चारे की व्यवस्था कर सके ताकि पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य के साथ दुग्ध उत्पादन को भी बढ़ाया जा सके। वागाराम ने बताया कि केन्द्र पर समय–समय पर आयोजित होने वाले विभिन्न शिविरों, जागरूकता कार्यक्रम, तकनीक स्थानान्तरण सत्रों में भाग लेते रहते है जिससे उन्हें पशुओं की उचित देखभाल, टीकाकरण कार्यक्रम, सतुंलित आहार प्रबंधन, हरे चारे का महत्व, कृमिनाशक दवाइयो के बारे में जानकारी प्राप्त हो सके। वागाराम अपनी इस सफलता का श्रेय वे अपनी मेहनत के साथ–साथ अपने परिवार वालो एवं पशु विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिको को देते हैं।

सम्पर्क: वागाराम, गांव सिकवाड़ा
तहसील जसवंतपुरा, जिला जालौर (मो. 94149-92791)

निदेशक की कलम से...

पशुपालन: ग्रामीण समृद्धि, पोषण सुरक्षा और आत्मनिर्भर भारत का सशक्तआधार

भारत एक कृषि प्रधान देश है और इस कृषि व्यवस्था का अभिन्न एवं अनिवार्य अंग पशुपालन रहा है। प्राचीन काल से ही भारतीय ग्रामीण जीवन में पशु केवल उत्पादन का साधन नहीं, बल्कि परिवार के सदस्य, आजीविका का आधार और सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन का केंद्र रहे हैं। आज के बदलते आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय परिदृश्य में पशुपालन की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। यह क्षेत्र न केवल किसानों की आय बढ़ाने में सहायक है, बल्कि पोषण सुरक्षा, रोजगार सृजन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करने में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा ळें वर्तमान समय में जब कृषि भूमि का आकार निरंतर घट रहा है, जलवायु परिवर्तन का प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है और पारंपरिक खेती लाभकारी नहीं रह गई है, तब पशुपालन किसानों के लिए एक भरोसेमंद विकल्प के रूप में उभर कर सामने आया है। विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों, भूमिहीन श्रमिकों तथा महिलाओं के लिए पशुपालन नियमित आय का स्रोत बन रहा है। दूध, दुग्ध उत्पाद, मांस, अंडा, ऊन और जैविक खाद जैसे उत्पाद ग्रामीण परिवारों की आर्थिक सुरक्षा को सुदृढ़ करते हैं। हालाँकि, आज का पशुपालन अनेक चुनौतियों से भी घिरा हुआ है। पशुओं में संक्रामक रोगों का प्रकोप, गुणवत्तापूर्ण चारे की कमी, पशु चिकित्सा सेवाओं की सीमित उपलब्धता, उत्पादन लागत में वृद्धि और बाजार की अस्थिरता जैसी समस्याएँ पशुपालकों के सामने खड़ी हैं। इसके अतिरिक्त जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि, वर्षा के अनियमित पैटर्न और प्राकृतिक आपदाओं का प्रभाव पशुधन स्वास्थ्य एवं उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है। इन परिस्थितियों में परंपरागत तरीकों के साथ–साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना अनिवार्य हो गया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने पशुपालन क्षेत्र में नई संभावनाओं के द्वार खोले हैं। उन्नत प्रजनन तकनीक, कृत्रिम गर्भाधान, सेक्स–सॉर्टेड सीमेन, भ्रूण प्रत्यारोपण, संतुलित पोषण प्रबंधन, टीकाकरण और रोग नियंत्रण कार्यक्रमों ने पशु उत्पादकता में उल्लेखनीय सुधार किया है। डिजिटल तकनीक के माध्यम से पशुओं की स्वास्थ्य निगरानी, मोबाइल पशु चिकित्सा सेवाएँ और ऑनलाइन बाजार से जुड़ाव आज के समय की आवश्यकता बन चुके हैं। यदि इन नवाचारों को सरल भाषा और व्यावहारिक प्रशिक्षण के माध्यम से पशुपालकों तक पहुँचाया जाए तो यह क्षेत्र आर्थिक क्रांति का आधार बन सकता है। इसके साथ ही स्वदेशी पशु नस्लों का संरक्षण और संवर्धन अत्यंत आवश्यक है। भारत की देशी नस्लें अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता, कम चारे में जीवित रहने की क्षमता और स्थानीय जलवायु के अनुकूलन के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। दुर्भाग्यवश, अंधाधुंध संकरण और उपेक्षा के कारण अनेक अमूल्य नस्लें विलुप्त होने की कगार पर हैं। पशुपालन क्षेत्र में युवाओं और महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करना भी अत्यंत आवश्यक है। आज पशुपालन केवल परंपरागत कार्य नहीं रह गया है, बल्कि यह एक लाभकारी उद्यम का रूप ले चुका है। डेयरी आधारित स्टार्टअप, बकरी– पालन, मुर्गी–पालन, सूअर–पालन, मधुमक्खी–पालन, मत्स्य–पालन तथा दुग्ध और मांस उत्पादों का मूल्य संवर्धन युवाओं के लिए स्वरोजगार के नए अवसर प्रदान कर रहा है। उचित प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता, सहकारी मॉडल और बाजार से सीधा जुड़ाव इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। सरकार द्वारा पशुपालन के विकास हेतु चलाई जा रही विभिन्न योजनाएँ और कार्यक्रम इस क्षेत्र को नई दिशा प्रदान कर रहे हैं। राष्ट्रीय पशुधन मिशन, व्यापक टीकाकरण अभियान, पशु स्वास्थ्य कार्ड, दुग्ध सहकारी संस्थाएँ और बुनियादी ढाँचे का विकास सराहनीय प्रयास हैं। किंतु इन योजनाओं की वास्तविक सफलता तभी संभव है जब शिक्षा संस्थान, वैज्ञानिक, विस्तार कार्यकर्ता और पशुपालक आपसी समन्वय और सहभागिता के साथ कार्य करें। पशु कल्याण, पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक लाभ के बीच संतुलन बनाए रखना हम सभी का सामूहिक और नैतिक दायित्व है। अंततः यह कहा जा सकता है कि पशुपालन केवल एक आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि भारतीय समाज की जीवन पद्धति और सांस्कृतिक चेतना का अभिन्न अंग है। यदि परंपरागत ज्ञान को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़ा जाए, नीति और नवाचार में सामंजस्य स्थापित किया जाए तथा पशुपालकों को केंद्र में रखकर योजनाएँ बनाई जाएँ, तो पशुपालन ग्रामीण समृद्धि का सबसे सशक्त माध्यम बन सकता है। आज आवश्यकता है दृढ़ संकल्प, संवेदनशील सोच और सामूहिक प्रयास की, ताकि पशुपालन को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाकर राष्ट्र निर्माण में इसकी भूमिका को और अधिक सुदृढ़ किया जा सके।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

''धीणे री बात्यां''
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
संपादक
डॉ. संजय सिंह
डॉ. वैशाली
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया